International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 02-06-2024, Accepted: 24-06-2024, Published: 18-07-2024
Volume 10, Issue 3, 2024, Page No. 20-22

प्रदीप सौरभ का उपन्यास 'तीसरी ताली' में सामाजिक विवशता की अभिव्यक्ति

जितेन्द्र कुमार मीणा
हिंदी विभाग, गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय, गांधीनगर, गुजरात, भारत

सारांश
स्त्री और पुरुष को सृष्टि का आधार स्तम्भ मानते हुए। समाज ने इनको दो लिंगों की मान्यता दी है। लेकिन जिस सृष्टि की उपज का परिणाम स्त्री और पुरुष है। वही उसको स्वीकार नहीं करते समाज का अंग मानने से इंकार करते है और उसकी उपेक्षा भी करते है वो है 'थर्ड जेंडर'। लेकिन अपने स्वार्थ हित अनुसार तथाकथित सभ्य समाज के लोग इनका इस्तेमाल करते है। किन्नर समाज की व्यथा का चित्रण गहन संवेदना से किया है जो पाठक को बांधे रखता है। प्रदीप सौरभ ने बहुत ही साहस और हिम्मत के साथ तीसरी दुनिया के लोगों की समस्या से जुड़े तथ्यों को उजागर किया है। सभ्यता के विकास के साथ मानव कि सोच में बदलाव हुआ लेकिन कुछ मान्यताएं नहीं बदल पायी इनमे से है 'थर्ड जेंडर' के प्रति समाज का नज़रियाँ। जिससे उनकी विवशता बढ़ती ही जाती है।

मूल शब्दः जैविक संरचना, थर्ड जेंडर, सामंतवादी कुप्रथा

प्रदीप सौरभ निजी जीवन में खरी–खोटी हर खुबियों से लैस। खड़क, खुर्राट और खरे मौन में तर्कों का पहाड़ लिये इस शख्स नें कब–कहाँ और कितना जिया इसका हिसाब–किताब कभी नहीं रखा। बंधी–बधाई लीक पर नहीं चले भले ही जीवन की नाव "भँवर" पर अटकी खड़ी हो। कानपुर में जन्में लेकिन लम्बा समय इलाहाबाद में गुजरा वहीं विश्वविद्यालय से एम. ए किया। जन आन्दोलनों में हिस्सा लिया कई नौकरियाँ करते–छोड़ते दिल्ली पहुँच कर "साप्ताहिक हिंदुस्तान" के सम्पादकीय विभाग से जुड़े। कलम से तनिक भी ऊबे तो कैमरे की आँख से बहुत कुछ देखा जिसका परिणाम "तीसरी ताली" रचना के रूप में सामने है।

इस उपन्यास में प्रदीप सौरभ ने भारतीय परिप्रेक्ष्य को बड़ी बारीकी से प्रस्तुत किया है। इस रचना में आएं उतार–चढ़ाव को देखते हुए एक–एक पात्रों के माध्यम से समाज के दोहरे व्यक्तित्व को चित्रित किया है।

इस उपन्यास के मुख्य पात्र है– डिम्पल, गौतम साहब, आनन्दी आंटी, राजा उर्फ़ रानी, मंजू, रेखा चितकबरी, बाबू श्याम सुन्दर सिंह, सुविमल भाई, अनिल, ज्योति, गोपाल, विनीत उर्फ़ विनीता, फोटोग्राफर विजय, यास्मीन, जुलेखा, रति आदि है। इन लोगों की व्यथा है की "तीसरी दुनिया" में धकेलने में केवल इनकी जैविक संरचना ही नहीं अपितु इस सभ्य कहे जाने वाले समाज की और भी बहुत सारी खामियां है। जिसके कारण यह लोग अपने आप को इस क्रूर समाज में सुरक्षित महसूस नहीं करता। किन्नर समुदाय जिसमे गुरु का सम्मान है। सब प्यार से रहते है, चोरी, भीख मांगना वेश्यावृति करना पाप माना जाता है। सब लोग एक विशेष अनुशासन में रहते है, इसलिए समाज से धकेल दिए लोग भी यहाँ आकर चौन पाते है।

इस उपन्यास में विनीत उर्फ़ विनीता, निकिता और नीलम ऐसे पात्र है जो जन्म से श्रापित है उन्हें समाज स्वीकार नहीं करता। विनीत के पिता और निकिता की माता ने अपने बच्चों को घर में रखकर शिक्षा दिलवाना चाहते है, किन्तु स्कूल से जवाब मिलता है कि 'जेंडर स्पष्ट न होने के कारण हम दाखिला नहीं दे सकते है। यह स्कूल सामान्य बच्चों के लिए है बीच वाले बच्चों को दाखिला देने में स्कूल का माहौल खराब हो जाता है। ऐसे बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ रहने भी नहीं दिया जाता, आखिर में इनके माता–पिता इन्हें किन्नरों को सौपने का निर्णय लिया करते है।

निकिता को नीलम के डेरे में भेजा गया, जहाँ नीलम को निकिता से लगाव हो जाता। क्योंकि नीलम की कहानी भी ऐसी ही, थी। लेकिन निकिता इस माहौल में फिट नहीं हो पाई और वह आत्महत्या कर लेती है। वहीं दुसरी ओर विनीता घर से भागकर अपना पार्लर का काम करने लगती है और काफी ख्याति प्राप्त कर लेती है। दूसरी तरफ वह पात्र है जो भूख, गरीबी, बेरोजगार व समाज के विवशता के शिकार है। जिनमे मुख्य है मंजू। इसकी माता ने गरीबी के कारण इसे डिम्पल के डेरे में दे दिया था। डिम्पल भी इसे अपनी बेटी की तरह प्यार करती थी। लेकिन मंजू राजा के प्रेम में पड़ कर गर्भवती हो जाती है, तो डिम्पल मंजू का गर्भपात करवा देती है। और राजा का पुरुषांग काट कर उसे नपुंसक बना देती है, किन्तु कुछ समय बाद डिम्पल को पश्चाताप होता है। लेकिन समय तो अपने हिसाब से ही चलता है अतः राजा रानी बनकर किन्नरों में मिल जाता है। उसे यहाँ कम से कम पेट भरने को भोजन तो मिल जाता है। इसी तरह काम के अभाव में 'शेरपा' भी इन्हीं की दुनिया में आश्रय लेता है और अपनी जिन्दगी व्यतीत करता है। वहीं ज्योति की व्यथा भिन्न है वह समाज के ठेकेदारों के दुष्कर्मों से विवश होकर किन्नर बन जाता है। ज्योति जमीदारों की लौंडागिरी से निकाले जाने के बाद उसे पेट भरने के लिए कहीं भी काम नहीं मिलता है। "ज्योति बहुत कोशिश करता है कि वह चाय–वाय की दुकान खोल ले। परन्तु सवाल उसके सामने यही उभरता कि दलित लौंडे की दुकान में चाय कौन पियेगा, लौंडे पर सवारी तो की जा सकती है लेकिन उसके हाथ का खाना–पीना सभ्य लोगों के लिए हराम है।"[1]

इसलिए इस प्रकार के सभ्य कहें जाने वाले लोगों की घिनौनी हरकतें ज्योति को किन्नर बनने के लिए विवश करती है। ज्योति सोनम से कहता है कि बिना हिजड़े के भी तो हिजड़ा बना हुआ हूँ जो अपने को मर्द कहते है। वे कौन से हिजड़ों से कम है। गरीब का बेटा हूँ तो पूरे गाँव की भौजाई बन गया हूँ। सोनम के जवाब से इस समुदाय में बनाएं नियमों का महत्व देखा जा सकता है "मैं तुम्हे किन्नर नहीं बना सकती। भगवान ने तुम्हे पूरा आदमी बनाया है। वैसे भी हम भगवान से डरते है किसी सही आदमी को हिजड़ा बनाना हमारे समाज में पाप है। लेकिन ज्योति के शब्दों में किन्नर और साधारण आदमी में क्या अंतर है। दोनों को ही तो भगवान ने बनाया है। मैं तो उसे हिजड़ा मानता हूँ जो सही फैसला नहीं करते है। मौके पर पाछा दिखाकर भाग जाते है।"[2] ज्योति के द्वारा सामन्तवादी कुप्रथा 'लौंडा रखने के विषय के विषय में खुलासा किया गया है। जब तक सामन्तवादी सनक के अनुरूप ज्योति का जीवन चलता है तब तक वह श्याम सुन्दर

सिंह का प्रिय रहता लेकिन किसी और के चुम्बन मात्र से ही वह उनके लिए अछुता हो जाता है। यहाँ निर्धनता ने पहले उसे लौंडा बनाया और बाद में हिजड़ा। यहाँ धनवान, और निर्धन के समीकरण को एक भयावह पहलू में दिखना है। "ज्योति कहता है,कि माना मैं मर्द हूँ लेकिन यह समाज मुझ से मर्द का काम लेने के लिए राजी नहीं है। मुझे इस समाज ने मादा की तरह भोग की चीज में तब्दील कर दिया है। मैं मर्द रहूँ या किन्नर बन जाऊं इससे किसी को कोई फर्क नहीं पड़ेगा। जनाब पेट की आग तो बड़ों–बड़ों को न जाने क्या से क्या बना देती है। मैं तो सिर्फ किन्नर ही बन रहा हूँ।"[3]

विनीत के विनीता बनने की कहानी से हमारे सामने समाज के कई रहस्य उदघाटित होते चले जाते है, सैक्स रैकेट में किन्नरों का प्रयोग धडल्ले से किया जा रहा है। पुलिस किस प्रकार किसी इंसान को इस्तेमाल करती है। "इस्पेक्टर शर्मा द्वारा विनीता को रेखा चितकबरी को सौंपना चाहते है, ताकि कुछ ऊपर की कमाई हो जाए।"[4] मानवता की अभिव्यक्ति का जीता जागता मुकम्मल व्यक्तित्व का परिचय 'राज चौधरी' है एक कांस्टेबल लेकिन वह इंस्पेक्टर की तरह घुसखोर नहीं है। वह मजबूरों का फायदा नहीं उठाते है,बल्कि वह उनकी किसी न किसी तरीके से मदद कर समस्या का समाधान करते है। विनीता को अपने घर ले जाना और उसको अपनी पुत्री की तरह प्यार करना। उसे पार्लर का कोर्स करवाना आदि से ही धीरे–धीरे अपना पार्लर 'गे वर्ल्ड' से होते हुए टी .वी चौनलों की सुर्ख़ियों से अख़बारों के पेज थ्री की चर्चित हस्ती बनना उसके संघर्ष को दिखता है। साथ ही 'राज चौधरी' के मानवीय पक्ष को भी इंगित करता है।

विजय प्रोफेशन से प्रोफिशनाल फोटोग्राफर है लेकिन वह शारीरिक रूप से लैंगिक विकृत है। वह कुदरत व समाज के बन्धनों को तोड़कर अपनी पहचान बनना चाहता है। "विजय का कहना है की 'दुनिया के दंश से अपने आपको बचाने के लिए मैंने लगातार लड़ाई लड़ी और खुद को स्थापित किया। मै नाचना–गाना नहीं, नाम कमाना चाहता था। भगवान राम के उस मिथक को झुठलाना चाहता हूँ जिसके कारण तीसरी 'योनि' के लोग नाचते– गाने के लिए अभिशप्त है।"[5]

विजय भारतीय समाज की रूढ़िवादी मानसिकता को तोड़कर नये आयामों को खड़ा करना चाहता है। वह स्वतंत्र अभिव्यक्ति की पुरजौर पैरवी करता है। वह बताना चाहता है की भारत देश को आजाद हुए 72 वर्ष के बाद सामाजिक व्यवस्था में बदलाव के स्वरूप में बहुत बड़ा अंतर आया है। लेकिन आज भी समाज में 'गे और लेस्बियन' को अपने बीच स्वीकार नहीं है। यहाँ तक की किन्नर समाज को समाज के अलग पैमाने की ओर धकेल दिया है। कहने को तो विचारों में बदलाव आया है, लेकिन जब स्वीकार की बात आती है तो लोग नाक, भौंह सिकोड़ने लगते है। उनकी परछाईं से भी दूर भागने की कोशिश करते है। समाज में बहुसांस्कृतिक वर्गों को स्थान दिया हुआ है लेकिन वास्तविकता में इनको कोई स्थान नहीं दिया हुआ। सहानुभूति का ढोंग करते हुए बड़े–बड़े व्याख्यान देते है और कहते है की समाज में सभी वर्गों का समान अधिकार है। सब अपना जीवन सामाजिक गतिविधियों से संचालित करेगें आदि। पर जब बात प्रयोग की आती है तो उनसे किनारा काटने लगते है, और रात के अँधेरे में इन्ही का भोग कर अपनी कामेच्छा को पूर्ण करते है।

"के. जी मार्ग पर किन्नर के दीवानों का देर रात तक मेला लगा रहता है। बड़ी–बड़ी गाड़ियाँ रुकती है,और सौदा कर अपनी हवस पूरी करते है। इस धंधे को पुलिस का पुरा संरक्षण होता है।"[6] मानवीय मूल्यों के आधार पर किन्नर के जीवन का अगर मूल्यांकन करे तो वह बेमौत मरने वाली जिन्दगी यापन कर रहे है। उपन्यास के माध्यम से अँधेरे में पनपने वाले जीवन की ओर एक आशा की किरण तथा मानवीयता को उजागर करने का एक प्रयास किया है। साथ में संवेदना के भाव को भी उजागर किया है, उपेक्षित और हाशिये के समाज को सम्मान एव मानवीय दृष्टि से देखने का एक नजरिया समाज को देने की कोशिश की है।

प्रदीप सौरभ उपन्यास 'तीसरी ताली' के माध्यम से भ्रष्ट व्यवस्था पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी करते है। "शोभा ने जब मंच पर आकर अपने विचार रखने शुरू किए, तो हाल में सन्नाटा छा गया। उसने कहा की नेता और भ्रष्टाचार एक–दूसरे के दो नाम है। हम हिजड़े ही समाज को दीमक की तरह चाट रहे नेताओं से बचा सकते है। हम ही भ्रष्टाचार को दूर कर सकते है। हमारे न तो कोई रिश्तेदार है और न ही इसकी सम्भावना। हमें तो पैदा होते ही गटर में फेंक दिया जाता है। ऐसे में हम भ्रष्टाचार किसके लिये करेंगे !"[7]

यहाँ प्रश्न चिन्ह है उन लोगों के लिए जिन्होंने ऐसा कहने के लिए मजबूर किया। यहाँ श्याम सुन्दर सिंह, सुविमल भाई जैसे खद्दरधारी,सफेदपोश लोग है जो सत्ता के लिए कुछ भी कर गुजर जाते है। श्याम सुन्दर सिंह जैसे लोग परिस्थितियां उत्पन्न कर आग में घी डालने का काम 'चौधरी और खुराना' जैसे लोग करते है। किन्नर होना दोष उस व्यक्ति का नहीं है दोष उस हारमोंस का है जो गर्भवती महिला के पेट में ग्यारहवें सप्ताह में सेक्सुअल आर्गन को विकसित करने में अपनी भूमिका पुरी नहीं कर पाया। जिसके कारण वह इस तृतीय लिंग में जन्मा। जिसको तथाकथित समाज के कुछ लोग अलग–अलग नामों से अभिहित करते है। जो एक तरह से गलत है मानसिकता में बदलाव आना पर सही समय पर सही विचारों के साथ आना ज़रूरी है।

भारतीय कानून व्यवस्था में धारा 377 को निरास्त कर देना। सभी को एक समान अधिकार देना, ताकि यह अपना जीवन स्वेच्छा से व्यतीत कर सके। लेकिन कानूनी प्रक्रियाओं के बाद भी समाज में इनको लेकर धारणाएं ज्यों की त्यों संकीर्ण बनी है। समस्या शिक्षा व्यवस्था कि है, जो इनको सीमित किए हुए है क्योंकि हम लोग शिक्षा के द्वारा 10 वी की कक्षा में जीव विज्ञानं के माध्यम से स्त्री, और पुरुष के जननांग के बारे में तो जान लेते है। लेकिन तृतीय लिंग के बारे किसी को कुछ नहीं पता होता। जिसके कारण व्यक्ति उन लोगों के प्रति अनेक दृष्टि रखता है। और अपने हिसाब से उनको जानने की कोशिश करता है। साथ ही दूरियां भी बढ़ाते जाता है यह सोंच कर की समाज उसे क्या कहेगा। लेकिन किन्नर की बात करे तो वह हमारे लिए क्या विचार रखती है उसको हम एक उदाहरण से समझ सकते है। "ईश्वर ने हमें लोगों को अपशगुन से बचाने की ताकत दी है, उसके द्वारा हमारा काम लोगों के साथ रहकर उनको आशीर्वाद देना है। दूसरों की तरह लड़ना–झगड़ना नहीं है।"[8]

भारतीय कानून व्यवस्था ने 2014 में इन्हें तीसरे लिंग के रूप में पहचान दे दी है। भेदभाव से बचाने और अधिकारों के संरक्षण के लिए केन्द्रीय कैबिनेट ने तृतीय पर्सनल बिल 2016 को मंजूरी दे दी। शिक्षा व रोजगार के अवसर, चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध करवाने के साथ बच्चा गोद लेने का अधिकार देने की व्यवस्था बनाई गई है। लेकिन यह सब होने के बाद भी आज समस्या ज्यों की त्यों है। कारण है मानसिकता का संकीर्ण होना है, यह लोग इनको अपनाने का दिखावा तो करते है। लेकिन अपनाते नहीं है विवशता की खाई खोदते जाते है।

इस में प्रदीप सौरभ ने अस्मिता और पहचान के संकट से जूझने वाले वर्ग और उसके संघर्ष को दिखाया है। लेखक ने इस उपन्यास के माध्यम से समाज में व्याप्त जाति प्रथा, अमीरी, गरीबी, भूंख, बेरोजगारी, राजनीति व सत्ता की करतूतों का वर्तमान समय से पर्दा उठाया है। जहाँ आम लोगों के लिए यह वर्जित दुनिया है। समाज से बहिष्कृत और दण्डित जीवन जीने को मजबूर ये लोग तीसरी ताली यानी किन्नरों के सुख–दुःख की आवाज है। उनके जीवन का दर्पण है। यह उपन्यास किन्नर समाज के सशक्तिकरण की पैरवी करता हुआ। उसकी सामाजिक विवशता को भी दर्शाता है।

निष्कर्ष

प्रदीप सौरभ के उपन्यास भारतीय समाज की विषंगतियों को उभारते हुए चलती है, और बताती है की समाज किस तरह तीसरे लिंग के प्राणी को सामाजिक सुविधाओं से वंचित करते हुए अपना स्वार्थ साधती है साथ ही उसे व्यवस्था के जाल में उलझाकर चारों भ्रमित है। जिसका जीता जागता सच यह उपन्यास है जिसमे विभिन समस्याओं का उजागर किया है यथार्थ के धरातल पर जो अपने आप में लेखक की पैनी दृष्टि का प्रमाण है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. तीसरी ताल, सौरभ, प्रदीप वाणी प्रकाशन 21 ए, दरियागंज, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2018, पृष्ठ संख्या–55
2. पृष्ट संख्या–12
3. पृष्ट संख्या–26
4. पृष्ट संख्या–35
5. पृष्ट संख्या–45
6. पृष्ट संख्या–55
7. पृष्ट संख्या–57
8. पृष्ट संख्या 84
9. थर्ड जेंडर विशेषांक (किन्नर विमर्श)–सामयिक सरस्वती पत्रिका, अंक 13–14
10. साहित्य और समाज–(संपादक) मिलन बिश्नोई प्रकाशक –विद्या प्रकाशन, कानपुर प्रथम संस्करण –2018